

(१३)

धन्य-धन्य वीतराग वाणी, अमर तेरी जग में कहानी ।
चिदानंद की राजधानी, अमर तेरी जग में कहानी ॥टेक॥
उत्पाद-व्यय अरु ध्रौव्य स्वरूप, वस्तु बखानी सर्वज्ञ भूप ।
स्याद्वाद तेरी निशानी, अमर तेरी जग में कहानी ॥१॥
नित्य-अनित्य अरु एक-अनेक, वस्तु कथंचित् भेद-अभेद ।
अनेकांतरूपा बखानी, अमर तेरी जग में कहानी ॥२॥
भाव शुभाशुभ बंधस्वरूप, शुद्ध-चिदानन्दमय मुक्तिरूप ।
मार्ग दिखाती है वाणी, अमर तेरी जग में कहानी ॥३॥
चिदानंद चैतन्य आनन्द धाम, ज्ञानस्वभावी निजातम राम ।
स्वाश्रय से मुक्ति बखानी, अमर तेरी जग में कहानी ॥४॥

(१४)

सुनकर वाणी जिनवर की,
म्हारे हर्ष हिये न समाय जी ॥टेक॥
काल अनादि की तपन बुझानी,
निज निधि मिली अथाह जी ॥१॥
संशय, भ्रम और विपर्यय नाशा,
सम्यक् बुद्धि उपजाय जी ॥२॥
नर-भव सफल भयो अब मेरो,
'बुधजन' भेंटत पाय जी ॥३॥

(१५)

मुख ओंकार धुनि सुनि अर्थ गणधर विचारै ।
रचि-रचि आगम उपदेसै भविक जीव संशय निवारै ॥
सो सत्यारथ शारदा, तासु भक्ति उर आन ।
छंद भुजंगप्रयाततैं, अष्टक कहौ बखान ॥

(भुजंगप्रयात)

जिनादेश ज्ञाता जिनेन्द्रा विख्याता, विशुद्धा प्रबुद्धा नमों लोकमाता ।
दुराचार-दुर्नहरा शंकरानी, नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी ॥१॥

सुधाधर्म संसाधनी धर्मशाला, सुधाताप निर्नाशिनी मेघमाला ।
 महामोह विध्वंसिनी मोक्षदानी, नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी ॥२॥
 अखैवृक्षशाखा व्यतीताभिलाषा, कथा संस्कृता प्राकृता देशभाषा ।
 चिदानंद-भूपाल की राजधानी, नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी ॥३॥
 समाधानरूपा अनूपा अक्षुद्रा, अनेकान्तधा स्याद्वादांक मुद्रा ।
 त्रिधा सप्तधा द्वादशाङ्गी बखानी, नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी ॥४॥
 अकोपा अमाना अदंभा अलोभा, श्रुतज्ञानरूपी मतिज्ञान शोभा ।
 महापावनी भावना भव्य मानी, नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी ॥५॥
 अतीता अजीता सदा निर्विकारा, विषै वाटिका खंडिनी खड्ग धारा ।
 पुरापाप विक्षेप कर्ता कृपाणी, नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी ॥६॥
 अगाधा अबाधा निरध्रा निराशा, अनन्ता अनादीश्वरी कर्मनाशा ।
 निशंका निरंका चिदंका भवानी, नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी ॥७॥
 अशोका मुदेका विवेका विधानी, जगज्जन्तुमित्रा विचित्रावसानी ।
 समस्तावलोका निरस्ता निदानी, नमो देवि वागेश्वरी जैनवाणी ॥८॥

जे आगम रुचिधरैं, प्रतीति मन माहिं आनहिं ।

अवधारहिंगे पुरुष, समर्थ पद अर्थ आनहिं ॥

जे हित हेतु 'बनारसी', देहिं धर्म उपदेश ।

ते सब पावहिं परम सुख, तज संसार कलेश ॥

(१६)

भ्रात जिनवाणी-सम नहिं आन, जान श्रुतपंचमि पर्व महान ॥टेक॥

एकान्तों का नहीं ठिकाना, स्याद्वाद का लखा निशाना ॥

मिटता भव-भव का अज्ञान, जान श्रुतपंचमि पर्व महान ॥१॥

केवलज्ञानी की यह वाणी, खिरे निरक्षर तदि समझानी ।

सुर-नर तिर्यंच सुनते आन, जान श्रुतपंचमि पर्व महान ॥२॥

गणधर हृदय विराजी माता, ज्ञानस्वभाव सहज झलकाता ।

सुनत चिन्तत हो भेद-ज्ञान, जान श्रुतपंचमि पर्व महान ॥३॥